दो०-कपि करि हृदयँ बिचार दीन्हि मुद्रिका डारि तब।
जनु असोक अंगार दीन्हि हरषि उठि कर गहेउ।। **12** ।।

तब देखी मुद्रिका मनोहर। राम नाम अंकित अति सुंदर ।।
चकित चितव मुदरी पहिचानी। हरष बिषाद हृदयँ अकुलानी ।।
जीति को सकइ अजय रघुराई। माया ते असि रचि नहिं जाई ।।
सीता मन बिचार कर नाना। मधुर बचन बोलेउ हनुमाना ।।
रामचंद्र गुन बरनैं लागा। सुनतहिं सीता कर दुख भागा ।।
लागीं सुनैं श्रवन मन लाई। आदिहु तें सब कथा सुनाई ।।
श्रवनामृत जेहिं कथा सुहाई। कही सो प्रगट होति किन भाई ।।
तब हनुमंत निकट चलि गयऊ। फिरि बैठीं मन बिसमय भयऊ ।।
राम दूत मैं मातु जानकी। सत्य सपथ करूनानिधान की ।।
यह मुद्रिका मातु मैं आनी। दीन्हि राम तुम्ह कहैं सहिदानी ।।
नर बानरहि संग कहु कैसें। कही कथा भइ संगति जैसें ।।

दो०-कपि के बचन सप्रेम सुनि उपजा मन बिस्वास।
जाना मन क्रम बचन यह कृपासिंधु कर दास।। **13** ।।

हरिजन जानि प्रीति अति गाढ़ी। सजल नयन पुलकावलि बाढ़ी ।।
बूड़त बिरह जलधि हनुमाना। भयहु तात मो कहुँ जल जाना ।।
अब कहु कुसल जाउँ बलिहारी। अनुज सहित सुख भवन खरारी ।।
कोमलचित कृपाल रघुराई। कपि केहि हेतु धरी निठुराई ।।
सहज बानि सेवक सुख दायक। कबहुँक सुरति करत रघुनायक ।।
कबहुँ नयन मम सीतल ताता। होइहहिं निरखि स्याम मृदु गाता ।।
बचनु न आव नयन भरे बारी। अहह नाथ हौं निपट बिसारी ।।
देखि परम बिरहाकुल सीता। बोला कपि मृदु बचन बिनीता ।।
मातु कुसल प्रभु अनुज समेता। तव दुख दुखी सुकृपा निकेता ।।
जनि जननी मानहु जियँ ऊना। तुम ते प्रेमु राम कें दूना ।।

दो०-रघुपति कर संदेहु अब सुनु जननी धरि धीर।
अस कहि कपि गदगद भयउ भरे बिलोचन नीर।। **14** ।।

कहेउ राम बियोग तव सीता। मो कहुँ सकल भए बिपरीता ।।
नव तरू किसलय मनहुँ कृसानू। काल निसा सम निसि ससि भानू ।।
कुबलय बिपिन कुंत बन सरिसा। बारिद तपत तेल जनु बरिसा ।।
जे हित रहे करत तेइ पीरा। उरग स्वास सम त्रिबिध समीरा ।।
कहेहू तें कछु दुख घटि होई। काहि कहौं यह जान न कोई ।।